ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारत में सामाजिक नीति का विकास

प्रस्तावना

सामाजिक नीति (Social Policy) वह नीति है जिसके माध्यम से राज्य समाज के सभी वर्गों, विशेषकर गरीब, वंचित, कमजोर तथा पिछड़े वर्गों के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक विकास के लिए योजनाएँ एवं कार्यक्रम बनाता है। भारत में सामाजिक नीति का विकास एक लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। इसका स्वरूप समय-समय पर सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहा है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक सामाजिक कल्याण और सामाजिक न्याय की अवधारणा निरंतर विकसित हुई है।

भारत में सामाजिक नीति का ऐतिहासिक विकास

1. प्राचीन काल (Ancient Period)

प्राचीन भारत में सामाजिक नीति का आधार धर्म, नैतिकता एवं लोककल्याण था।

० प्रमुख विशेषताएँ

• राजा का मुख्य कर्तव्य प्रजा का कल्याण माना जाता था।

• शिक्षा के लिए गुरुकुल प्रणाली विकसित थी।

• निर्धनों, अनाथों एवं वृद्धों की सहायता की व्यवस्था थी।

• तालाब, कुएँ, धर्मशालाएँ एवं चिकित्सालयों का निर्माण कराया जाता था।

• समाज में दान, सेवा एवं परोपकार को विशेष महत्व दिया जाता था।

• अशोक के शासनकाल में अस्पतालों, सड़कों, वृक्षारोपण तथा पशु चिकित्सा जैसी अनेक लोककल्याणकारी योजनाएँ चलाई गईं।

2. मध्यकाल (Medieval Period)

मध्यकाल में सामाजिक नीति मुख्यतः धार्मिक संस्थाओं एवं शासकों के संरक्षण में विकसित हुई।

० प्रमुख विशेषताएँ

• मस्जिद, मंदिर, धर्मशाला एवं सराय का निर्माण।

• गरीबों को भोजन एवं आर्थिक सहायता।

• शिक्षा के लिए मदरसों एवं संस्कृत विद्यालयों की स्थापना।

• अकाल एवं प्राकृतिक आपदाओं में राहत कार्य।

• धार्मिक दान एवं सामाजिक सेवा की परंपरा का विस्तार।

3. ब्रिटिश काल (1757–1947)

ब्रिटिश शासन का मुख्य उद्देश्य प्रशासन एवं व्यापार था, फिर भी सामाजिक सुधारों की दिशा में कुछ महत्वपूर्ण कानून बनाए गए।

• प्रमुख सामाजिक सुधार

• सती प्रथा उन्मूलन अधिनियम (1829)

• विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (1856)

• बाल विवाह निषेध संबंधी प्रयास

• आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विकास।

• सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का प्रारंभ।

• रेल, डाक एवं संचार व्यवस्था का विस्तार।

० प्रमुख समाज सुधारक

• राजा राममोहन राय

• ईश्वरचंद्र विद्यासागर

• महात्मा ज्योतिराव फुले

• डॉ. भीमराव अंबेडकर

• महात्मा गांधी

इन समाज सुधारकों ने महिलाओं, दलितों, पिछड़े वर्गों तथा गरीबों के अधिकारों के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए।

4. स्वतंत्रता के बाद का काल (1947 के बाद)

स्वतंत्रता के बाद भारत ने स्वयं को एक लोकतांत्रिक, समाजवादी एवं कल्याणकारी राज्य के रूप में विकसित करने का लक्ष्य अपनाया।

संविधान में सामाजिक नीति

भारतीय संविधान सामाजिक नीति का प्रमुख आधार है।

मुख्य उद्देश्य—

• सामाजिक न्याय

• आर्थिक न्याय

• राजनीतिक न्याय

• समान अवसर

• मानव गरिमा

• मौलिक अधिकार

• राज्य के नीति-निर्देशक तत्व

5. पंचवर्षीय योजनाओं का योगदान

भारत में पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से सामाजिक नीति को प्रभावी बनाया गया।

मुख्य क्षेत्र—

• गरीबी उन्मूलन

शिक्षा का विस्तार

• स्वास्थ्य सेवाएँ

• रोजगार सृजन

• ग्रामीण विकास

• महिला एवं बाल विकास

• अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण

6. उदारीकरण के बाद (1991 से वर्तमान)

1991 के आर्थिक सुधारों के बाद सामाजिक नीति का स्वरूप और व्यापक हुआ।

प्रमुख विशेषताएँ

- समावेशी विकास (Inclusive Development)
- कौशल विकास
- डिजिटल सेवाएँ
- महिला सशक्तिकरण
- सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ
- ग्रामीण एवं शहरी विकास
- सतत विकास (Sustainable Development)

प्रमुख योजनाएँ

- महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा)
- आयुष्मान भारत योजना
- स्वच्छ भारत मिशन
- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम

1 भारत की सामाजिक नीति के प्रमुख उद्देश्य

2 सामाजिक न्याय स्थापित करना।

3 समान अवसर उपलब्ध कराना।

4 गरीबी एवं बेरोजगारी कम करना।

5 शिक्षा एवं स्वास्थ्य का विस्तार।

6 महिलाओं एवं बच्चों का विकास।

7 अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़े वर्गों का उत्थान।

8 सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना।

समावेशी एवं सतत विकास सुनिश्चित करना।

भारत की सामाजिक नीति की प्रमुख विशेषताएँ

- कल्याणकारी राज्य की अवधारणा
- सामाजिक न्याय पर आधारित
- लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक व्यवस्था
- समानता एवं मानवाधिकारों का संरक्षण
- कमजोर वर्गों का सशक्तिकरण
- जनसहभागिता पर बल
- समावेशी एवं सतत विकास

निष्कर्ष

भारत में सामाजिक नीति का विकास प्राचीन लोककल्याणकारी परंपराओं से प्रारंभ होकर आधुनिक लोकतांत्रिक एवं कल्याणकारी राज्य की अवधारणा तक पहुँचा है। स्वतंत्रता के बाद संविधान, पंचवर्षीय योजनाओं तथा विभिन्न सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक न्याय, समानता एवं मानव विकास को बढ़ावा दिया गया। वर्तमान में सामाजिक नीति का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को सम्मानजनक जीवन, समान अवसर तथा सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हुए समावेशी एवं सतत विकास सुनिश्चित करना है।

हिंदी संदर्भ ग्रंथ

1 सिंह, सुरेन्द्र. (2018). भारत में सामाजिक नीति. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।

2 अहलूवालिया, एस. पी. (2012). सामाजिक नीति एवं सामाजिक विकास. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स।

3 दुबे, श्यामाचरण. (2001). भारतीय समाज. नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।

4 शर्मा, रामनाथ. (2014). भारतीय समाज एवं सामाजिक समस्याएँ. आगरा: अटलांटिक

पब्लिशर्स।

5 अवस्थी, ए. एवं अवस्थी, आर. (2019). भारतीय सामाजिक व्यवस्था. आगरा: रिसर्च पब्लिकेशन।

English References

1 Richard M. Titmuss. (1974). Social Policy: An Introduction. London: George Allen & Unwin.

2 T. H. Marshall. (1965). Social Policy. London: Hutchinson.

3 Paul Spicker. (2008). Social Policy: Themes and Approaches. Bristol: Policy Press.

4 James Midgley. (2014). Social Development: Theory and Practice. London: Sage Publications.

5 Government of India. (1950). The Constitution of India. New Delhi: Government of India Press.